C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

B-1

मौक्तिक

सम्पादक

मूलचन्द 'प्राणेश'

प्रकाशक

राजस्थान साहित्य अकादमी के सहयोग से

भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान

बीकानेर (राजस्थान)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

मौक्तिक

सम्पादक

मूलचन्द 'प्राणेश'

प्रकाशक

राजस्थान साहित्य अकादमी के सहयोग से

भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान

बीकानेर (राजस्थान)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

● प्रकाशक
राजस्थान साहित्य अकादमी के सहयोग से
भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर (राज०)

● प्रथम संस्करण : गणतन्त्र दिवस (१९७३ ई०)

● © भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर (राज०)

● मूल्य : चार रुपये मात्र

● मुद्रक
एजूकेशनल प्रेस
बीकानेर (राज०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अनुक्रमणिका

प्रकाशकीय ७
प्राक्कथन ८
श्री ओम केवलिया
—धरती की अंगड़ाई २०
—सोए राग जगाओ साथी २२
श्रीमती कमला वर्मा
—एक शब्दचित्र ८४
श्री कान्ह महर्षि
—ऊंचो उड म्हारा नवल तिरंगा ३०
—आ रहा नूतन ३१
श्री चंचल हर्ष
—ओ मेरे देश १३
—भारत माता की संतान १६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

श्री जुगलसिंह खीची
—है सुन्दर संसार ७४
श्री दीनदयाल ओझा
—साच री जोत ६३
—अभिनव शृंगार ६५
श्री धनंजय वर्मा
—जागै सोयो ज्ञान जी ७७
श्री बुलाकीदास बावरा
—गांव २७
—दीपक सा जलता अंतर्मन २८
श्री भंवरलाल छजलानी
—अब जनतंत्र री बारी है ९३
श्री भंवरलाल सुथार 'भ्रमर'
काम करो ८८
श्री भरत व्यास
—वाह रे म्हारा डोकरड़ा ४४
—पच्चीस वर्ष ४६
श्री भवानीशंकर व्यास 'विनोद'
—चेतना री खतावणी ५५
—बंगला देश का जन्म ५९
श्री मकबूल अहमद 'अमिताभ'
—रोशन माता रो नांव करो ८३
डा० मनोहर शर्मा
—बूढो भारत ३३
—स्वाधीनता रो सुख ३५
श्री मालचन्द खड़गावत
—स्वाधीनता रजत जयंती-वर्ष ८०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

श्री मूलचन्द 'प्राणेश'
आवो आंपां आदमियत ऊगावां ९५
श्री मोहन आलोक
—गांधी की लाडली ५२
श्री मोहम्मद सदीक
—आजादी ३९
श्री योगेश्वर 'मनुज' राजस्थानी ६७
—घटनाओं के फळ ६७
श्री रामदेव आचार्य
—नित राजस्थान जियो ७५
श्री रामनाथ व्यास 'परिकर'
—लारला पच्चीस वर्ष ४७
श्री वल्लभेश दिवाकर
—बोलो जय-जय भारती ९२
श्री पं० विद्याधर शास्त्री
—लक्ष्यम्परम्पावनम् ११
श्री विशनलाल 'मतवाला
—धरती हिन्दुस्तान की १७
—चलना है अंगारों पर १९
श्री शंभूदयाल सकसेना
—भारत-गीत ११
श्री शिखरचन्द्र कोचर
—तुम बढ़े चलो हे नौजवान ८९
श्री शिव पांडे बीकानेरी
—हेमाळो २५
श्री शिवराज छगाणी
—समं भागतो जावै ७०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

—मायड़ भासा रै सिरजणहारां रै नांव ७१

श्री श्रीकृष्ण विश्नोई

—म्हारो देश २३

श्री सरल विशारद

—दो कवितावां ७८

श्री सांवर दईया

—सुरक्षा के संदर्भ में ४१

श्री सूर्यशंकर पारीक

—आजादी री ऊंची गादी ३७

श्री हनुमान पारीक

प्रहरी और तुम ८५

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रकाशकीय

'मौक्तिक' का यह प्रकाशन सोद्देश्य है। आजादी के पच्चीस बरस पूरे होने पर देश में देश-भक्ति और सर्जनात्मक प्रवृत्तियों का रूप-रंग देखना और तत्संबंधी गहरी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति सहज-सामान्य बात हो गई है। इसी सिलसिले में इन कविताओं का यह संकलन किया गया है। इनमें कई प्रकार के स्वर मुखर हुए हैं। दिशा-निर्देश भी हैं और बदलते हुए समाज के प्रति आस्था भी। नई प्रतिभाएं अपना नया रंग लेकर आई हैं। जो पुराने हैं, उनकी मंजी हुई, परिष्कृत भावनाएं नई पीढ़ी का संबल बनेगी, दोनों ही वरेण्य हैं।

मेरे सहकर्मी श्री मूलचन्द 'प्राणेश' ने जिस तत्परता और निष्ठा के साथ यह संपादन-कार्य किया है, वह सराहनीय है। श्री सूर्यशंकर पारीक ने प्राक्कथन लिखकर इसका वजन बढ़ाया है और कवियों का सही परिप्रेक्ष्य में परिचय कराया है।

अकादमी ने अपनी सबद्ध संस्थाओं को यह कार्य अपने-अपने क्षेत्रों के लिए सौंपा था। पांच सौ रुपये की धनराशि प्रस्तुत संकलन के लिए दी है। हम उनके बड़े आभारी हैं।

बीकानेर,
गणतंत्र-दिवस (१९७३ ई०)

सत्यनारायण पारीक
संचालक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्राक्कथन

'मौक्तिक' हिन्दी एवं राजस्थानी कविताओं का सुंदर संकलन है। इसमें तेतीस कवियों की ४४ रचनाओं को समाविष्ट किया गया है। हिन्दी की २३, राजस्थानी की २१ एवं संस्कृत की १ रचना इसमें स्थान पा सकी है। इसमें अधिकांशत: उन कवियों की रचनाओं को स्थान दिया गया है जो या तो बीकानेर क्षेत्र के मूल निवासी हैं या जिन्होंने अपना कार्य-क्षेत्र इस क्षेत्र को बना लिया है।

इसमें सम्मिलित प्राय: सभी कविताओं का विषय राष्ट्रीय भावों के रूपात्मक अनुभवों से अलंकृत है। राष्ट्र की जागृति के लिए तथा बराबर उस भाव को सजग बनाये रखने के लिए ऐसी राष्ट्र-भक्ति-पूर्ण कविताएं जनमानस में उस भाव संस्कार का सदैव बीजारोपण करती हैं। सामाजिक चेतना के लिए भी ऐसी कविताओं का मूल्य बराबर बना रहता है। इसमें सम्मिलित कतिपय जिन कविताओं का राष्ट्रीय भावों से अतिरिक्त भाव बोध होता है मूलत: उनका भी राष्ट्रीयभाव पोषण करने का भाव ही है। चाहे वे मानवतावाद का परिपोषण करने वाली हैं और चाहे वे राष्ट्र भाषा हिन्दी का समर्थन करने वाली। कुछ कविताएं वर्तमान समय को व्यक्त करने वाली हैं जिनमें आक्रोश अथवा खेद का तीव्र स्वर है तो कुछ कविताओं का स्वर सुखद भविष्य की मधुर कल्पनाओं से समन्वित है। ऐसी कविताओं में आशा और विश्वास के स्वर अधिक मुखरता पा सके हैं। कुछ कविताएं बंगला देश जैसी जीवंत घटनाओं का चित्रण करती हुई, नजर आती हैं। उनमें वीरता की दुहाई, बलिदानों की प्रशंसा एवं राष्ट्र को सदा-सदा के लिए आजाद देखने की तीव्र कामना है। समन्वयवादी स्वर भी इन कविताओं में अपना निराला स्थान रखता है। हिन्दू हैं तो क्या और मुसलमान हैं तो क्या अंतत: सभी भारत माता की संतान हैं। तब भेद-भाव कैसा ? गीता और कुरान उसी एक चिरंतन सत्य का ही तो बोध करवाते हैं। जहां इस देश के रक्षक अर्जुन-भीम जैसे धीर-वीर बलवान रहे हैं उसी के रक्षक अब्दुल हमीद, कीलर और शैतानसिंह जैसे निर्भय और अडिग वीर रहे हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

यह शौर्य की धरती है। यहां क्रांतियां पलती रही हैं। जीवन की बाजी लगाकर भी इस की शान रखना है—जय-विजय के स्वर का संधान करना है। यहां के कवियों ने सदैव सिंधु राग का आलाप किया है। मौक्तिक का कवि भी बलिदानों की महिमा का बखान करता है—

तन मन धन सब करे न्यौछावर, चादर स्वाभिमान की
वीर प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की

भारत की पुरातन परम्परा है कि वह किसी को उजाड़ता नहीं, बल्कि बसाता है; जुल्मों का प्रतिकार करता है। अभी पिछले दिनों जब मानवता के हत्यारों ने (वर्तमान बंगला देश में) कहर ढाहना शुरू किया तब हमारे देश ने ही उन पर गाज पटक कर 'गाजी' को डुबोया, नियाजी को झुकाया और मानवता की पुनः प्रस्थापना की—

आपने कितने घर उजाड़े हैं
हमने उजड़े हुए बसाये हैं
तुमने बोये हैं पेड़ कांटों के
हम तो फसले बहार लाए हैं

और तभी 'मौक्तिक' का कवि आजादी को हासिल करने वाले का अभिनंदन करता है और कहता है—

शैतानों के जबड़ों में से लाई जाती है आजादी
मस्तक का मोल चुकाकर के पाई जाती है आजादी

× × ×

जो खून शहीद बहाते, उसका पार नहीं हो सकता है
मां बहिनों का बलिदान कभी, बेकार नहीं हो सकता है

यह देश हमेशा से लड़ना, मरना और शत्रु को मारना जानता है परंतु हार मानना नहीं जानता। यह धरती वीर प्रसूता है। इसके पानी में वीरत्व है। यहां, धरती का मोल माथा देकर चुकाया जाता है। यहां कवि आजादी के प्रतीक तिरंगा में शहीदों का दर्शन करता है। साथ ही कवि को इस बात का पश्चात्ताप भी है कि जो भारत भरे पूरे परिवार का मालिक है किंतु उसकी संतान सुखी नहीं है। स्वाधीनता और पराधीनता में अंतर है किन्तु उस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

शासक और इस शासक की मौज-मस्ती में कोई अन्तर नहीं है। वह पराया और यह 'स्व' है। 'मौक्तिक' का कवि आज की छलना और प्रवंचना से भी अत्यंत दुखी है। श्यामपट्टों एवं पोस्टरों पर 'आदर्श वाक्य' लिखे हुए हैं किन्तु कार्य उसके विपरीत किया जाता है। कवि गांधी का सश्रद्धा स्मरण करता है और उनके अनुयायियों पर व्यंग्य कि वे उनके आदर्शों पर कितना चलते हैं। और इसीलिए एक कवि ने इस बात की भर्त्सना की है कि जिस राष्ट्रभाषा हिन्दी को महात्मा गांधी चाहते थे वह 'अपने ही घर में प्रवासिनी हो रही है।' और इसीलिए एक कवि ने 'मायड भासारै सिरजणहारां रै नांव' अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी है। 'मौक्तिक' का कवि जहां प्रकृति वर्णन में अपनी अनुरागात्मकता रखता है वहां वह सभी के लिए मंगल कामना करता हुआ भी दृष्टिगोचर होता है—'मरणै री भूख जियो', 'जिण आजादी नै कायम राखी वा तरवार जियो', 'बीरां री बड़क जियो' और 'आगै री आस जियो' जैसे प्रयोग हृदय में संमोहन उत्पन्न करते है तथा कानों को सरस।

इसीलिए इस धरती का मोल अनमोल है——

ईं धरती रो मोल आंकलै, दुसमीरी औकात नहीं
रगत सींच म्हे बेल बधाई, कोरी थोथी बात नहीं

यहां का कोई कवि 'इतिहास रचें' की सुन्दर भावाभिव्यक्ति करता है तो कोई यह साधिकार कहता हुआ भी सुनाई पडता है कि 'आजादी प्राप्ति के बाद जो-जो कार्य हमारे देश में हुए हैं, वे कम नहीं हैं। आज हम अपने पैरों पर खड़े हैं किन्तु कवि यह भी स्वीकार करता है कि अभी शोषण से मुक्ति पाना है। कोई कवि जीने के लिए मरना सीखो का पाठ पढ़ाता है। कोई कह रहा है—नारावाजी निरर्थक है, श्रमनिष्ठ बनो। किसी कवि के स्वर में निरंतर गतिशीलता का आग्रह तो किसी को अभीष्ट है—

कण-कण से आवाज आ रही, हमें चाहिए एकता

मौक्तिक का एकमात्र संस्कृत कवि अनेक मंगल कामनाओं के साथ उद्बोधन के स्वर में भोगी जीवन के त्याग की ओर संकेत करता है। तो कोई यहां राष्ट्रभावों के साथ प्रकृति संस्कृति के गीतों का उद्गाता बना हुआ है। किसी-किसी कवि का स्वर सभी भावों का वाहन करता नजर आता है। अतः 'मौक्तिक' इस प्रकार लघु संकलन होता हुआ भी अपनी-अपनी दिशा में कवियों के भावबोध का प्रतिनिधित्व करता है।

—सूर्यशंकर पारीक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• श्री पं० विद्याधरः शास्त्री

लक्ष्यम्परम्पावनम्

स्वातन्त्र्यंखलुभारतस्य जगतां
स्वातन्त्र्यरक्षाकरम्
सर्वेषांहितसाधकम्प्रतिपदं
विश्वात्मसन्तर्पणम् ।
नित्यं निन्द्यतमोन्नति जंगति सा
सद्भिर्जनै गंण्यते
लोकानां हि सुखस्थिति वंत यया
जायेत दुःखान्विता ।

लोकेऽस्मिन् परिपूर्यते परमिदं
लक्ष्यं हि नैतत् स्वतः
नित्य यस्यक्ते तपो मुनिवरैः
पूर्वैः कठोरं कृतम् ।
त्याज्यं सम्प्रति सौख्यवृत्तिजनकं
भोगात्मकं जीवनम्
तत्तत् साध्य सुसाधनाय सततं
स्थेयं सुसज्जेस्तथा ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• श्री शंभूदयाल सक्सेना

भारत-गीत

सरिताओं का देश हमारा यहीं हंस होते हैं
यहीं ओढ़ कर हिम की चादर शैल शिखर सोते हैं
किरणों का किरीट माथे पर यहीं वृक्ष धरते हैं
पुष्प राशि से लता-कुंज सब यहीं गोद भरते हैं

झरनों के अविरत प्रपात में करती स्नान शिलाएं
यहीं बैठ दो घड़ी जगत से हम मन-प्राण जुड़ाएं
कमल कुमुद से भरे सरोवर तारों छाई रातें
यहीं चन्द्रकर शिशिर कणों से करते चुपचुप बातें

यहीं इन्द्र धनु रंगता दुर्लभ मेघों की मनुहारें
श्वसन बांस कुंजों में गाता मीठी मंजु मलारें
ऋषि-मुनियों की पुण्य-भूमि यह मृग मोरों का घर है
थल-थल मंदिर, प्रति मंदिर शुचि लिये देवता वर है

विश्व वंद्य यह देश कि जिसके सागर चरण पखारे
संध्याएं आरती उतारें, शुक्र दीप कर धारे
साम गान था हुआ यहीं पर सोम पान कर करके
इसी देश के कंकड़-पत्थर से गंगा-जल ढरके

उपनिषदों की इसी भूमि में धर्म-कर्म फूले
संस्कृति झूली यहीं डाल कर ऊंचे-ऊंचे झूले
मातृभूमि का गौरव गिरि सा वेद पुराण पुरातन
जिसके हृदय-स्रोत से कलकल बहता अविरल जीवन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• श्री चंचल हर्ष

ओ मेरे देश !

ओ मेरे देश
मेरे जीवन
मेरी मुस्कान
तू मेरा सब कुछ
मेरे अभिमान।
बह रही शीतल हवा
मिला आमोद
अडिग हिमगिरी
रक्षक खड़ा विशाल
और दैत्याकार
'भाखड़ा'-'नांगल'
'चंबल'-बांध
तुझ में ही
अविराम चलती
गंगा की पावन लहर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कर स्नान जिसमें
भक्त के
क्लेश जाते बिखर।
और कहीं
राजधानी से कुछ ही दूर
यमुना किनारे
'ताज' की है गोद
स्नेह है तुझसे
मिला मुझे अगाध
तेरे ही वक्ष पर
'भिलाई'-'चित्तरंजन'
आदि कल-कारखानों की
चिमनियों से निकलती
श्रम की धूप
ओ मेरे देश
तेरे हैं, विविध रूप।
हास्य-रुदन
सब कुछ मेरा
तुझ पे कुरबान
ओ मेरे देश
मेरी मुस्कान
तू मेरा सब कुछ
मेरे अभिमान।
दिवस हो या हो अंधेरी रात
बस मुझे केवल
तेरा ही ध्यान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

हैं कोटि-कोटि
तेरी संतान
'अर्जुन'-'भीम'
धीर-वीर बलवान
'गांधी'-'गौतम'
'नेहरू' के अरमान
पाट कर भेदभाव की खाई
हटा रहे ऊंच-नीच की
दीवार।
आज भी पौरुष,
नहीं झुक पाया है
जागता है, हर खेत पर किसान
और सीमा पर
बर्फ से दबी
घाटियों में
हर घड़ी-चौकस खड़ा है
'अब्दुल हमीद', 'कीलर'—
'शैतान सिंह' बन कर
निर्भय—अडिग
तेरा हर जवान
ओ मेरे देश
मेरे जीवन, मेरी मुस्कान
तू मेरा सब कुछ
मेरे अभिमान।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• *श्री चंचल हर्ष*

भारत माता की संतान

हम हिन्दू हम मुसलमान, भारत माता की संतान
नहीं जानते भेदभाव हम, सबका हम करते सम्मान
'गांधी'—'गौतम' की भूमि पर
प्यार सदा पलता है
सत्य-अहिंसा लिये अडिग
यह स्नेह दीप जलता है
मंदिर-मस्जिद— सभी एक हैं
गीता वही और वही कुरान
हम हिन्दू हम मुसलमान
भारत माता की संतान
कितने युग बीते और आये
फिर भी हम बलशाली
गंगा-यमुना की धरती पर
ईद वही और वही दिवाली
एक सदा है मंजिल अपनी
होठों पर खिलती मुस्कान
हम हिन्दू हम मुसलमान
भारत माता की संतान।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• श्री विशनलाल 'मतवाला'

धरती हिन्दुस्तान को

वीर प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की ।
लुटता हो गर गौरव इसका, वो बेला अभियान की ।।

ओ भारत के वीर सपूतो !
अपनी निद्रा त्यागो;
शत्रु द्वार पर आ जाये तो
जाग, जगाओ, जागो;

यह वह धरती है जिसके खातिर, बाजी खेली प्राण की ।
वीर-प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तुम सब वे हो जिन्होंने ही,
इस की आन रखी है;
काट जुल्म की सीमाएं,
अपनी शान रखी है;

बोल उठे सब कोटि-कोटि स्वर, जय-विजय संतान की।
वीर प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की।।

यह वह धरा है जहां वीरों ने,
सर्वस्व अपना त्याग दिया;
भारत मां के बेटों ने–
जिस के हित बलिदान दिया;

तन, मन, धन सब करे न्यौछावर, चादर स्वाभिमान की।
वीर प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की।।

आतंकित जब हुई धरा तो,
फैली जौहर ज्वालाएं;
जोश में आए बच्चे लेकर–
कुर्बानी की मालाएं;

परवाह नहीं तब करते कोई, भले-बुरे अन्जाम की।
वीर प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• *श्री विशनलाल 'मतवाला'*

चलना है अंगारों पर

चलना है हमको जलते अंगारों पर
राहों में कांटे बिछे, आंधियां आए
हम शूरवीर तूफानों में मुस्काए
यह शौर्य की धरती, यहां क्रांतियां पलती
तम नाशक की ज्वालाएं, नित यहां पर जलती
जिम्मेदारी है आज कर्णधारों पर
चलना है हमको जलते अंगारों पर

है कौन धरा पर हमें रोकने वाले
हम धीर-वीर हैं अल्हड़ मतवाले
हममें सागर सी है अथाह गहराई
नदियों सी गतिमान जिन्दगी पाई
अभिमान हमें है सद संस्कारों पर
चलना है हमको जलते अंगारों पर

हम देश-प्रेम में ओत-प्रोत दिल वाले
हर कदम-कदम पर तूफान उठाने वाले
हम जल्लादों को मजा चखाने वाले
हम अभिमानी को धूल चटाने वाले
विश्वास नहीं हमको मिथ्या नारों पर
चलना है हमको जलते अंगारों पर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• श्री ओम केवलिया

धरती की अंगड़ाई

इस धरा ने ली जो अंगड़ाई
आसमां ने थे फूल बरसाए,
जब सिपाही बढ़े थे सरहद पर
चाँद तारे भी देख मुस्काए।

लहरें उठती थीं गंगा-यमुना में
किसने रोका है उस रवानी को,
देश पर जो जान देते हैं
सिर झुकाया है उस जवानी को।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कितने डूबे जहाज पानी में
क्या हुआ हाल तेरे 'ग़ाजी' का,
कितनी फ़ौजों ने हार मानी है
सिर झुका दिया 'नियाजी' का।

हो सका जितना हमने समझाया
आपके ही ये जुल्म सारे हैं,
कितनी मासूम इज्जतें लूटीं
कितने वीरान ये। नजारे हैं।

आपने कितने घर उजाड़े हैं
हमने उजड़े हुए बसाए हैं,
तुमने बोए हैं पेड़ कांटों के
हम तो फसले बहार लाए हैं।

अब भी वक्त है सम्भलने का
इस हकीकत को आप पहचानें,
अक्ल अपनी ही काम आती है
इस सदाकत को आप गर जानें;

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

• श्री ओम केवलिया

सोए राग जगाओ साथी

सपनों में क्यों खो जाते हो
विपदा में क्यों घबराते हो
बुझते दीप जलें क्षण भर में, ऐसा साज बजाओ साथी
सोए राग जगाओ साथी।

क्यों चलते हो तुम मन मारे
सोते हो क्यों पांव पसारे
अगर वेदना छा जाए तो दुर्बलता मत लाओ साथी
सोए राग जगाओ साथी।

तुम गाओ तो धरा गगन हिल जाए
भूले भटके राही को मंजिल मिल जाए
रुको नहीं तुम बढ़े चलो अब, मरुस्थल को सरसाओ साथी
सोए राग जगाओ साथी।

कर्म - क्षेत्र से हटो न राही
मंजिल दूर नहीं है राही
अंधकार को चीर बढ़ो तुम, भारत स्वर्ग बनाओ साथी
सोए राग जगाओ साथी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

म्हारो देश

श्रो धिन भाग म्हारो
हूं ईं देश रो जायो
म्हांनै इण भोम सूं घणो हेत
गाऊं तेजो, बीजूं खेत
भाग मनाऊं
बो दिन कणै आवै
इण रै खातिर
आ म्हारी लाडी जान जावै
इण मायड़ रा लाल
इण रै खातिर
बणिया काळ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

इण जुग रो इतिहास बणायो
'पृथ्वी' से 'इन्दिरा' तक आयो
इण भारत रो माण
सारै जग छायो
इण वीरां रो गान
सारे जग गायो
जो आयो शरण में ईंरी
बो बणग्यो तन-धन रो सीरी
जब बिलखतड़ा देख्या टाबरिया
इण मायड़ रै थण सूं
दूधां री धारा बहग्यी
भारत मां रै आगै
जिण नें शीश झुकाया
रोटी कपड़ा माण
सभी कुछ पाया
पण,जिण रो मन खोटो,
मनसोबो खोटो
वांरे तो रहसी—स्वर्ग ही टोटो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

● श्री शिव पाण्डे, बीकानेरी

हेमाळो

भारत रै बच्चै-बच्चै नै, औ प्राणां स्यूं प्यारो है ।
झुक्यो न झुकसी हेमाळो, औ राजस्थानी नारो है ।।

लड़णो जाणां मरणो जाणां
अर जाणा हा मारणो
दुसमण री छाती चढ जाणां
पण ना जाणां हारणो

म्है राणा सीवाजी, म्हांरो खून घणो खारो है ।
झुक्यो न झुकसी हेमाळो, औ राजस्थानी नारो है ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

ई नै लांघणिय री छाती
दे गोळ्यां री तोड़सां
फौलादी हाथां स्यूं सै मिल
बीरा प्राण निचोड़सा

कासमीर सोने री चिड़िया, औ आंख्यां रो तारो है ।
झुक्यो न झुकसी हेमाळो, औ राजस्थानी नारो है ।।

इण धरती रै पाणी में ही
वीर पणै री जाण है
जनम सूरवां नै देवै नित
आ वीरां री खाण है

मौतड़ल्यां दे मोल चुकावै, औ मिनखां रो धारो है ।
झुक्यो न झुकसी हेमाळो, औ राजस्थानी नारो है ।।

अणगिणती री कुरबानियां ही
राखी इण री लाज है
हिन्दू मुसलिम सिख इसाई
सै रै सिर रो ताज

औ भारत री ढाल इयै नै, सब धरमां रो सारो है ।
झुक्यो न झुकसी हेमाळो, औ राजस्थानी नारो है ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

गांव

आ गांवड़लै री बात, बावळा, चमक चांदणी रात
कोई गीतड़लो गावै रे, मन भरमावै रे
कुइक कुइक कोई कोयर तेवै, खोली काढै रे
भरिया खेळी कोठां माथै, छांगां लावै रे
पावै ऊंठ बकरड़ी गाय, गोविन्दो गाडीणा ले जाय
लुगायां लाखो गावैरे, मन भरमावै रे
आ गांवड़लै री बात.........
ऊंची ताण मचाण, गोफणी बावै हाळी रे
बाड़ां सिगली छाप, कर खेतां रुखवाली रे
पिऊजी छाछ राबड़ी खाय, गौरड़ी मन ही मन मुळकाय
घूंघटं में सरमावै रे, मन भरमावै रे—
आ गांवड़लै री बात ....
धान भरी छाट्यां नै देख, टाबरिया नाचै रे
अमल गळंतो देख, गौरड़ी मैंदी राचै रे
भूमै लोग-लुगायां-नार, मनावै दीयाळी त्यौहार
झिग मिग ज्योत जगावै रे, मन भरमावै रे
आ गांवड़लै री बात, बावळा, चमक चांदणी रात
कोई गीतड़लो गावै रे, मन भरमावै रे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

• श्री बुलाकीदास बावरा

दीपक सा जलता अन्तरमन

दीपक सा जलता अन्तरमन
साधक सा पलता ये जीवन

मैं पला कुटी के आंगन में, महलों की किंचित् चाह नहीं
शूल सहारे मेरे, मुझको फूलों की परवाह नहीं
जो पतझर को पैमाने दे, बेजुबां धरा को गाने दे—
औ बिकी बहारों की बगिया तक, रुकते जिनके पांव नहीं
मैं उनकी सांसों का सरगम
दीपक सा जलता अन्तरमन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मेरे तप का सूरज तो, हर ग्रह से गौरवशाली है
इस धरती के पात्र सभी, तारों से वैभवशाली हैं
जो बलहीनों को सम्बल दे, मां वसुन्धरा को 'चम्बल' दे
औ सावन दे दे उन पेड़ों को, जिनकी जर्जर डाली है
मैं, उनके सपनों का सावन
दीपक सा जलता अन्तरमन
साधक सा पलता ये जीवन

वो मेरे संग क्या चल पायें, जिन्हें किनारे भाते होंगे
वो मेरे संग क्या चल पायें, जो झंझा से घबराते होंगे
जो तूफानों से खेल सके, जो बड़वानल को झेल सके
औ'राह नहीं मिलने पर, खुद, अपनी राह बनाते हों
मैं मेहनतकश का मन भावन
दीपक सा जलता अन्तरमन
साधक सा पलता ये जीवन ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

ऊंचो उड म्हारा नवल तिरंगा

ऊंचो उड म्हारा नवल तिरंगा, लहर-लहर म्हारा नवल तिरंगा
ऊंचो उड म्हारा विजयी झण्डा
छपन क्रोड थारा गुण गावै ।

थारै तार-तार में लाखूं अमर शहीद निजर आवै
गांधी, तिलक. कवीश रवीन्दर, हुळक-मुळक मन हरखावै ।
आखो जग थारा गुण गावै ।

मां रै धोळै दूध सरीखो, धोळो रंग, रंग लावै
अमन·चैन रो शख बजा कर, जीवण-जोत जगा जावै
आखो जग थारा गुण गावै ।

हंसी खुसी हरियाली हरियो नुंवो संदेशो मन भावै
हरित क्रांति रा मूंघा हीरा, हळ सूं खोदै सो पावै
आखो जग थारा गुण गावै ।

जननी जलमभोम री मैमा, है ऊंची आ समझावै
देस धरम री आण बाण पर, केसरिया भल अपणावै
आखो जग थारा गुण गावै ।

चक्र सुदर्शन परम तेजरो बुद्धि में बळ बरसावै
गरजै वीर सुणै जद गीता, रण जीतै, जग जस छावै
छपन क्रोड थारा गुण गावै ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आ रहा नूतन

धर्य धर, सन्निकट निश्चय ही सवेरा
क्रूर कर्मा कृष्ण वदना क्षीण तन्वी
यह तमिस्रा सांस अन्तिम गिन रही है
तरुण प्रेतों की जवानी, राज-सत्ता
देख वह प्रतिक्षण निरन्तर छिन रही है
क्षय-तमीचर तारकाओं की प्रभाएं
आसुरी माया विगत, मृततम-सपेरा—
धैर्य धर, सन्निकट निश्चय ही सवेरा ॥ १ ॥

जो यहां स्थाणु स्वयं को मान बैठे,
देख तो भू-कम्प उनके आसनों में
बदलते क्या देर लगती, चल-जगत में
मिट रहा इतिहास, बदलते शासनों में
जो मरुत के साथ, वह कैसे अचल है !
क्रांति-रथ के चक्र का ही प्रथम फेरा—
धैर्य धर सन्निकट, निश्चय ही सवेरा ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

त्रसित की उर आह, स्वर की रौद्र ध्वनियां—
श्रवण से हिलता कुशासन का सिंहासन
पलटते फरमान, कुत्सित कामना से
नित नए होते अमित दूषित प्रकाशन
पर न सक्षम ये सकामी साधनाएं
प्रकट होता 'तपन' जलता तमस-घेरा—
धैर्य धर सन्निकट निश्चय ही सवेरा ॥ ३ ॥

फड़फड़ाती पंख खग-कुल बालिकाएं
मर्मरित झुरमुट सरव तरु-नीड़ सारे
कुररी कण्ठों ने अलापा राग भैरव
ताम्रचूड़ों ने मटक लुप्त पदोच्चारे
घुल रहा नभ रक्त धारा के सलिल में
दिग दिगन्तों में भगा जाता अंधेरा
धैर्य धर सन्निकट निश्चय ही सवेरा ॥ ४ ॥

एक सरसी के निवासी सहज साथी,
कमल विकसित कुमुद लुंठित गत विभव है
उल्लुओं चमगादड़ों के पलक झपके,
क्योंकि नवयुग सर्जना का यह प्रसव है
आ रहा नूतन जहां तू, मैं न मेरा—
धैर्य धर सन्निकट, निश्चय ही सवेरा ॥ ५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• डा० मनोहर शर्मा

बूढो भारत

लाठी रै स्हारै
धूजतो-धूजतो
सड़क सूं परै
यो डोकरो
चाल्यां जावै है
चुपचाप ।
ईं रो माथो
क्युं तो बुढापै सूं
अर क्युं चिन्ता सूं
झुक्योड़ो है ।
यो याद करै है
आपरै उण दिनां नै
जद यो जुवान हो
अर ईं री भुजावां में
बळ हो ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

अब
बुढापै सूं भी बेसी
आपरै परवार री
माड़ी दशा
ईं रो माथो
भारी कर मेल्यो है—
बेटा-पोता सूं
भरचोड़ै घर सूं
घणखरा मिनख
नागा-भूखा
रुळता फिरै है।
कई इसा भी लायक निसरचा
कै आपरै मना में
स्वारथ रा भाठा पूजै है
अर ईं जीवती-जागती
मूरत नै बारै काढ दीनी।
अब ईं रै तन पर
उतरचोड़ा गाबा है
अर पेट में
मांग्योड़ी रोटी है।
अब यो न महाभारत है
न भारत है
बस आरत है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• डा० मनोहर शर्मा

स्वाधीनता रो सुख

स्वाधीनता अर पराधीनता में
भोत घणो फरक है
सुरग अर नरक रो आंतरो है ।

पैली भारत पराधीन हो—
विदेशी शासक परजा नै लूटता
अर आपरो घर भरता ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

आज भारत स्वाधीन है—
देशी शासक परजा नैं लूटै है
अर आपरो घर भरै है
शासक पैली भी सुरग में हा
अर आज भी सुरग में है
परजा पैली भी नरक में ही
अर आज भी नरक में है।

तो पछै स्वाधीनता अर पराधीनता में
फरक कांई रैयो ?

साची कैयी है—
भेड पर ऊन कुण छोडै है ?

अब भारत री जनता नै
भेड-रूप छोडर
सिंघ-रूप धारण करणो पड़सी
स्वाधीनता रो सुख
भेड कोनी भोग सकै
यो आनंद तो वनराज ई
ले सकै है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• श्री सूर्यशंकर पारीक

आजादी री ऊंची गादी

बरबादी तो सैं' लीनी पण, आजादीनैं कदे न छोडी
आजादी नै खोसणियां री, पकड़ सोबड़ी फेरी ठोडी
अथवा लड़ियो मरियो कटियो, पण बैरी रै कदे न सामै—
थक कर तैंतो टेकी गोडी

ज्यूं कर बैरी सामै आयो
हरख्यो पण ! तूं हुयो न कायो
भोपां ज्यूं छाया-छिन चढियो—
उफण्यो जोस काया न मायो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

देही तो अरपण कर दीनी, मा धरतीनै देई मानी
जे उण कानी किणी ज भाक्यो, पंजाळी-सी आंख काढली—
रे, धरती रा तैं अभमानी

जिन्दगानी नै मेल हथाळी
सामै चाल्यो मौत निमाणी
दूधां-पूतां लाजां राखी—
मोभी बेटो हुय अमराणी

रण-भोमां में सूंत दुधारी, बैरी नै खांडो कर नाख्यो
खड़ो रैयी पगमांड निसरड़ा, आयो हूं बचना में आख्यो

का लै काळू पग नी रोप्यो
कुण रोपै? तैं जेड़ो कोप्यो
आजादी रो तूं रखवाळो—
ओही बीज धरण तैं ताप्यो

पैलानै पैला तैं काढ्या, खसतां खिरतां ली आजादी
सास आज सावळसर आयो, देखी है जद आज बावळा —
आजादी री ऊंची गादी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• *श्री मोहम्मद सदीक*

आजादी

मानव मानीजो ला कोनी !
मिनखां रो लाजै मिनख पणो
धरती पर बोझ सवायो है।
इण मां धरती रै माथै पर-
काजळ सो दाग लगायो है ॥

पशुग्रां रो आछो पशुपणो
कद पशु पणै नै लाजै है,
म्है मिनख पणै नै लाज रया
पशुग्रां में नाम डुबायो है।

पुरखां री लाज राखणी है।
मत पड़ो-लड़ो-भूझो दुख स्यूं
नर हो-कायर ना नाम धरावो थे
थे धीरज रा धणी घणा
नारां री पांथ में आवो थे।

मिनखां रो मोल मोळ में है,
थे गिरता पड़ता आखड़ता
निठ नेड़ै सी आ लाग्या हो
खाल्यो-पीलो बस मौज करां
आ थे के ले भाग्या हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

दिन फिर गया रातां बीतै है
सूरज रो तेज पड़यो फीको
बायरयो सोग मनावै है
ए तारा तर-तर रूठ गया
जीवण री आस ! मीचली आंख

सत्यां रो सांचो सत टूटयो
मिनखां रै मूंछ होवै कोनी
वै बीतै युग री बातां है
सत हो सत्यां रो साथ मानवी
मूंछां हाळा घणा होया—

दिन धोळै धाड़ मानवी री
धनमान लूटणै में लागी
थे फाळ चूक ग्या लागो हो
म्है देख रया भागा भागी—

मत धोळ फूलिया बणो घणा
धोळै पर दाग घणो आवै
मिनखां रो मान बढ़ावण री
बातां रो ध्यान घणो आवै

कुरबानी रो बलिदानां रो
कुण मोल चुकावण चावै है—
आयो है घिरतो बायरयो
थामो-तो-थमसी-जावै है ।

बाळक सी न्हानी टाबर सी, आ हिन्द देसरी आजादी
आ सोरी सी कोनी ल्हादी ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

● श्री सांवर दईया

सुरक्षा के सन्दर्भ में

सुरक्षा कवच बन कर खड़े
ब्लेक आउट को भेदती
आसमान की ओर मुंह किये खड़ी
प्रकाश रेखाओं के साथ
जुड़े अस्तित्व को
कब तक समझाते रहें
सिर्फ बातों से ?

इन दिनों आदमी
पानी या दूध की जगह
मिट्टी का तेल क्यों पीने लगा है ?
क्यों लंबी और लंबी हो गई वे पंक्तियां
जहां नागरिकों की विवशता का
मजाक उड़ाया जाता है ?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

देश के लिए काम आने वाला पैसा निगलती
ये सूअरनुमा आकृतियां
भामाशाह के वंशजों की
यह गंधाती नस्ल
कब तक जीवित रहने दें ?—
जो रेजगारी पिघलाती है
चवन्नी को
रुपये में बदलती रहती है।
दिनरात—
अनाज भरे गोदामों पर
'आउट ऑफ स्टॉक' की
तख्तियां लटकाये रखती है

'खून नहीं हिम्मत चाहिए' के बराबर
'रक्त दान दीजिये' के पोस्टर पर
कीचड़ उछालते मस्तिष्कों के कुतर्क
कब तक सुनते रहें ?
और कब तक खुले रहने दें वे मुंह
जो-जन समूह का मनोबल गिराने की
अफवाहें फैलाते हैं ?

दिसम्बर की बर्फानी रातों में
घरों में लगे बिस्तर छोड़ कर
अंधेरी गलियों में
पहरा देने वाले नवयुवक
लावारिस-आवारा कैसे हैं ?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मुनाफाखोरों की बढ़ाई हुई
महंगाई को लात मार
एक दिन का वेतन कटवाने वाले
कर्मचारियों के कंधे
सीमा पर युद्ध-रत सिपाहियों के कंधों से
कैसे मिले हुए नहीं हैं ?

हमारा एक मन्तव्य
एक विश्वास
एक स्वर
एक लक्ष्य
विफल बनाने वालों को
इतिहास जब माफ करेगा
तब करेगा
फिलहाल हम
हिसाब चुकाना
कब तक स्थगित रखें ?
—— ? ……—? —— ?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

● *श्री भरत व्यास*

वाह रे म्हारा डोकरड़ा

वाह रे म्हारा' 'डोकरड़ा'', तूं इसो जियो, भर जाये हियो
जो 'राम' की पोथी आगै धर कर, काम किया करड़ा-करड़ा,
रे वाह रे म्हारा डोकरड़ा......

मैं थारी पोथी बांची हूं, कह रचौ में थानैं सांची हूं।
थे पत्थर हो या माणसिया, थे हो कमाल म्हारा "धणियां"
थे किती-किती सुईयां खाई, और किता-किता खाया कांटा
थे तो ठाडा ! हंस कर सहग्या, थां जिता-जिता आया आंटा
"महादेव" गयो पण के मजाल-जो आंख्यां में आंसू आवै
पण किरिया-करम-करके "बापू", धर-मजलां धर-कूचां-जावै
बेटे स्यूं प्यारो "पूत" गयो, "महादेव" के सागे "सूत" गयो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

"वा" नै आ चिन्ता घणी, थांरो इक बेटो "ऊत" गयो
थे गया, घणा बिगड़्यो सारो, म्हे लिख-लिख कर हारया खरड़ा
रे वाह रे म्हारा डोकरड़ा......

थे तो थांरै जीवण नै, सीधो-साधो जीकर अमर हुआ
पण गैल पूत जो छोड गया, वे घर में पड़्या रवै सोया।
य छाया ले न सक्यो कोई भी, इण थारी परछांयी की
'ठाकर' बण कर ठसकै सारा, बारात सजी है नाई की
ये थानै तो भगवान बणा कर, आप बण्या सब ससारी
दारू पीवै जूआ खेलै, या कहर्‌यो "पद्मो" पंसारी
जो थारी 'लीक' छोडदी तो मर ज्यागा सब अरड़ा-अरड़ा
रे वाह रे म्हारा डोकरड़ा......

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

श्री भरत व्यास

पच्चीस वर्ष

याद करो वह दिन जिस दिन जननी की जंजीरें टूटी,
औ' मत भूलो यह दिन जिस दिन मन गई आत्मायें रूठी।
इस राष्ट्रमुक्ति मध्यान्तर में, अवनति और उत्कर्ष हुआ
युग-युग की पराधीनता का वो कलमष कलियुग शेष हुआ
अपने पांवों पर खड़ा आज, ये अपना "भारत" देश हुआ
इसकी अरुणिम तरुणाई में, है रक्त भरा बलिदानों का
इसकी 'जय' में है गूंज रहा, स्वर बांके वीर जवानों का
इस दिन किन-किन को याद करें, 'बापू' को वीर 'जवाहर' को
सैनिक 'सुभाष' को याद करें या 'भगतसिंह' से नाहर को
या कोटि-कोटि उन वीरों को, जो पहने केशरिया बाने
हंस-हंस कर यहां शहीद हुए, जो बढ़ें 'तिरंगा' लहराने
या याद करें उस 'गोली' को, जिसने हमसे 'बापू' छीना
वो 'बापू' जिसका 'राम-नाम' से, हुआ रक्त-रंजित सीना
संघर्ष मयी माता ने अब, माला पहनी विजयन्ती है
स्वातन्त्र्य रंग से रंगी हुई, यह अपनी रजत-जयन्ती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• श्री रामनाथ व्यास 'परिकर'

लारला पच्चीस बरस

बरस बै
बीत्योड़ा
म्हांरा
जिका जिया
म्हां—
भारत रा
दीन दुखी
आरत रा
ऊजळा,
घणखरा
धूंधळा
दीठपट माथै
जम्योड़ा
मटमैला सा'क......
उठता-पड़ता
टोपा पसीने रा
टोपा रगत रा

भारत कै
लिलाड़ सूं
झरता
खिण-खिण
गतिमान !
देस रै
हरख रा
सोग रा
अणजाण्या
बै बरस
धर-धर
धूजता सा
तणता सा
टूटता
तिणखलां ज्यूं !
(२)
जलम री

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

बैचीतकारां
हाल ई
सुणीजै है—
झेलम रै पार
जमना रै पार
हेमाळै रै
अर
सिखरां माथै
हेम री सिलावां
दीसै है......
टूटती
मूरती रा
दोनूं हाथ कटग्या......
वीनस द' मेलो
टूटचोड़ै मिंदर री
खंड-बंड
अेक मूरत जिसी
पड़ी वा
भारती......
भूली बिसरी
सांस्कृतिक
गफलत में
गुदळीज्योड़ी......
दोनूं पसवाड़ा
कटग्या हा
हेमसिला रा

अर
गळ परा
धाव दोनूं
बखत रै पड़दै सूं
पटग्या हा,
पड़गी ही
गैरी खाई !
जिका बरोबर
हुई गैरी
और गैरी !

(३)

गीध बैठो कुचरतो हो
मांग रै सिंदूर नै
बैंवतो रैयो
पिगळतो नित
सुकेसी वां
कास्मीरी घाटियां में
रंगतो तिरंगै चीर नै,
घणो गैरो लाल !
रगत सागी
हिमसिला री मांग में
जमग्यो हो थोड़ी ताळ......
राजनीतक,
जुवो कूटनीतक,
जमगी सतरंज
मो' रा बण गया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आपां......
बिक गयो सम्मान
म्हांरी
वैजयंती
घिर गई पाछी
अर
हमां
खाई चोट साची
रो दियो
म्हा रो
जवाहरलाल !
बिंध गया हारचा
निंवता अर
पड़चा म्हे मंद......
हाय किसड़ी दीनता !
अर
फंस्यो खांधो
अजगर रै जबाड़ां में......
सांतीरिच्छक फौज
म्हांरी
कोरिया में
और
कांगो में !
हुय गयो हो
सरव
सूनो

सींव माथै
निसींवो
पसरग्यो
हो
अेक खांफण
साव पीळो !

(४)

हुई रचना
फेर पाछी
ब्यूह री
जद गीध कुचरचो
घणो गैरो घाव नैं........
कूटनीतक चाल सूं
गीध नै टुकड़ो मिल्यो,
पार सींव रै
बदळतो
नित रयो पैरो.....
सस्त्र अमरीकी मिल्या
सगत रा हुंवता रया
नित नुवां
सव-परीक्षण
काळ रो
किसड़ो
भयानक रुदर चैरो !
हालता विक्रांत
अर फेरूं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

उड्या बै नैट ।
अगनबरसा में धधकता
पड़ण लाग्या जैट ।
कपट रै वातावरण में
खंभ रोप्यां म्हे खड़ा
त्याग अर बळदाण सागै
अगनमुख सूं जा भिड़्या
सेस हो सम्मान म्हांरो
प्रगट हो बळदाण म्हांरो !

(५)

भले झगड़ां सूं थक्योड़ो
पड़्यो पाकस्तान
सैन्य सत्ता री बंधारी
घणी थोथी सान
कुतै री हाडी रयी
रिसती रिसांती घाव
दमन री ही पराकाष्ठा
डूबती रंयी भंवर में
अरथ, भासा, भेद री बा नाव...
प्राण मोस्या मिरगलै रा
जुद्ध रै प्यासै
भूखियां बां भेडियां......
उठ्यो भारत
बग भू रो बचावण
सम्मान
फौजबळ सूं राकसां नै
जा खदेड़्या
अर
बंगला देश रै
बीं मुगत-रण में
देस री रण मेदनी
हो तोड़ नाख्यो
विखम घेरो
करयो हो
परत्राण !

(६)

राज अर समाज में हो
व्यापतो व्यामोह
घोर संकट री घड़ी ही
मांयलो विद्रोह
राजनीतक पुनर्रचना
सगत रो नवरूप
दळां में बंटग्या
सुवारथ, ईसकै सूं
पड़्या आंधं-कूप
बदळतै जुग री
बदळती चावनावां
और जन री चेतनावां
नव विचारां रो
नुंवो उद्घोस
नुवै मूल्यां रो
हुयो प्राकट्य !

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मनावण वै व्रत
पिरतग्यावां
बीं प्रवंचक
बीस बरसां री
कहाणी......
कठे समता !
कठे खमता !!
अेक हळचळ उठी
आर्थिक बा
पुनर्रचना
नव प्रयोगां री
हीमतभरी बीं
अेक क्रिया री
हुय गयी
सुरुवात !
राष्ट्र जनमत
हुय गयो जाग्रत
और
बीत्या दो दसक हा
आत्मग्लानी रै अंधारै में
कांपता सो
हांफता सो
चूर्ण अर विदीर्ण सो
बौ दर्प
काळ रो बदळो
चिर उडीक्यो
परीक्षत रो सर्प
फण तण्यां खड़ो है......
हरण लागी धुंध
चीत्कारां उठ रयी है
हिमसिलावां धूजती जावै
और नवयुग रो
किरण रो जाळ
भेदतो जावै विसमता
मंद्र वधता चरण
है थोड़ा संकै में !
सजगता है
राष्ट्र-मानस में
और
करवट ले रयो है
जवान भारत......
लैर है
उछाव री
फैरती जावै
पता का
राष्ट्र रथ माथै......
आ है
नव जागरण री
फूठरी वेळा !

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

• श्री मोहन आलोक

गांधी री लाडली

स्वतंत्रता प्राप्ति के पच्चीस वर्ष हैं
और—
मेरा बेचारा निस्सहाय देश है
जिसकी न निज भाषा है
न अपना वेश है।
बच्चों को बहलाने के लिए
यह गांधी के 'सपने' बेचता है
किताबों में
'स्वतंत्रता' या 'आजादी' के अर्थ में
'चारपाई' की जगह
'बैड' पर लेट कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'फ्डम' देखता है
ख्वाबों में
गान्धी !
जिसने कहा था—
'हिन्दी भारत की तो क्या !
एशिया की राज्य भाषा हो सकती है'
के जनाजे पर
इंगलिश का कफ़न डाला था इसने
उसकी आंखें बन्द होते ही
यह निरंकुश हो गया था
उसकी ममतामयी बेटी को
अनाथालय भेज
एक अंग्रेज की बेटी को
पाला था इसने
और आज तक—
उसे कुतर्कों के इन्जेक्शन लगाता
उपचमता
चुपकारता
संवारता
जवान करता रहा है
'हिन्दी'
जब-जब भी आई संसद की—
चौखट पर
उसको इंगलिश में भौंकने वाले
ब्रिटेन के कुत्तों से
कटवाता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

पिटवाता
अपमान करता रहा है ।
और आज तक
भारत की एक जवान जहान
पच्चीस वर्ष की बेटी
लाल किले के बाहर
सड़क पर सोती है
राष्ट्रपति भवन की स्वामिनी
समन्दरों पार की विलासिनी
हो रही है
गान्धी !
मुझे और मेरे देश को क्षमा करना
तेरी पुत्री आज
अपने ही घर में प्रवासिनी हो रही है !

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• श्री भवानीशंकर व्यास 'विनोद'

चेतनां री खतावणी

पौ फाटी रो उजास
भोर रै सुपनां नै चंचेड़ै,
बींरी गोदी में बैठो सूरज टाबर
चिड़कल्यां रै मूढ़ै बोलै
सुख भर नींद पौढ़णियां
अंधारै री खतावणी छोड़'र
आगै आवो
अर थांरा नुंवा खाता खोल'र
दिन री बही में दो आंक बधावो।
जूनी बात्यां रा
पिण्ड सरावण स्यूं
यादां रा गुटका पीवण स्यूं
ऊगन्तै सूरज रै घोड़ां री रासां
किंयां थमसी ?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

सिझ्या रै बिखरियोड़ै सिन्दूर सो
भोर रो मुट्ठी भर उजास कियां मिलसी?

सूरज री अणदेखी करियां
तावड़ै री जाजम नीं सांटी जै
गरूड़ पुराण बांचणियां स्यूं
जलम रा नारेळ नीं बांटी जै।

नुंवी पीढ़ी रै होठां माथै
टांकीजियोड़ा आखर
नुंवा अरथ चितेरै
पीढ़ीयां रै आंतरै स्यूं
भासा री खंख झाड़ै
अर बींनै गैरी दिस्टी री
रगड़ स्यूं चिलकावै।

कदास बुसबुसिजियोड़ा आखर
मुंढ़ो खोल नै कीं बोलै
तो जुगां रै गूंगै दरद री
कीं पिछाण तो हुवै
पोली धरती माथै नाठियोड़ा
गीतां रा निसाण तो हुवै।

बखत री ब्याकरण रा
अरथ बदळग्या
जूना पड़ियोड़ा सर्वनाम, विसेसण, क्रिया
थाक'र सूयग्या
मानखै री चीलख आंख नै
गैरा अरथ सूझै

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आभै रै ग्रांतरै स्यू
गैरो गोतो लगावै ।
बखत रै पाणी में तिरतो इतिहास
गोताखोर ज्यूं चिब्बी लगाय'र
मांयली बात काढ़ लावै
अर बीनै बैवतै पाणी में गलाय'र
ग्रापरा गाभा पैराय देवै ।
पण मसाणां रो पाड़ोसी
अधगावळो बखत
हालतांई
नुंवी जिन्दगी रा पगलिया
मांडणा चावै
अर बूढ़ी ग्रंगरख्यां
झगला टोपी में समाणी चावै
बांनै कै दो !
थांरै टांकी टांकणां री घड़ाई पूरी हुई
ग्रबै बखत रै टांचा क्यूं लगावो ?
थड़ी करती चेतणा नै
पगलिया लेवण द्यौ
गैलै बैवतै बदळाव रै
हुड़ी क्यूं लगावो ?
थांरी बांचीजियोड़ी पोथी नै
उथळता रो
नुंवा ग्राखरां री पींडी क्यूं पकड़ो ?
जीवंत सराध करणा हुवै तो करल्यो
बना-घोड़ी रा गीत ग्रबै कठै ?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

रळी रा गुटका पियां
बा सागी मिठास कठै ?
चेतणा में पीढ्यां रो आंतरो है
अबै इनै कुण पाटै ?
सुरग बिसाई लेवण हाळो बौपारी
जिन्दगी रा नु'वा थान किंयां सांटै ?
बिखरतै मेळै माथै क्यूं फिगरावो ?
खिडतै खेल में क्यूं बिलमावो ?
बखत री एक ठोकर खाय'र
आ बोदी चौपाळ ढै जासी
ईंरी बणघट मिट जासी
बोखी काण्यां'र ढळता किस्सा रै'जासी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• श्री भवानीशंकर व्यास 'विनोद'

बंगला देश का जन्म

चौबीस वर्ष का दमन चक्र, अत्याचारों की गहराई।
चौबीस वर्ष के बाद आज अभिनंदन की बेला आई॥

अभिनंदन है उस मुक्ति वाहिनी के जांबाज जवानों का।
अभिनंदन बंगला देश निवासी फौलादी इंसानों का॥

बेटों की भेंट चढ़ा डाली, अभिनंदन है माताओं का।
पतियों की आहूति दे दी, अभिनंदन उन विधवाओं का॥

उन सबकी त्याग तपस्या से ही बंगला देश बना आखिर।
सबके मिश्रित बलिदानों से ही देश एक जन्मा आखिर॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

पर इतनी सस्ती नहीं खून से सिंची हुई ये आजादी।
बेवाओं का दिल चीर धार से खिंची हुई ये आजादी ।।
शैतानों के जबड़ों में से लाई जाती है आजादी।
मस्तक का मोल चुका करके पाई जाती है आजादी ।।
पूरा का पूरा राष्ट्र जाग कर करवट जभी बदलता है।
तब जाकर दुनिया में कोई सा बंगला देश जन्मता है ।।

जब मांगों का सिन्दूर जाय तो धरती सिन्दूरी होती।
जब मां बहिनों का प्यार जाय तो कुर्बानी पूरी होती ।।
जब फौलादी सीने होते तो स्वयं मुट्ठियां तन जातीं।
जब बाजू शीशा पीते हैं तो कई क्रांतियां हो जातीं ।।
फौजी नंगी तानाशाही खुद फिरती जान बचाने को।
पंद्रह करोड़ बाजू उठते जब जब आजादी लाने को ।।

जिस समय क्रांति के चेहरे पर नूतन रौनक चढ़ आती है।
उस समय दरिन्दों के खातिर लाखों कब्रें खुद जाती है ।।
जब जब ऐसा माहौल बने, पत्थर भी आग उगलता है।
तब जाकर दुनिया में कोई सा बंगला देश जन्मता है ।।

जब बंगला देश जन्मता है, दानवता स्वयं चरमराती।
तानाशाही वाले फौजी शासन को फांसी लग जाती ।।
उस समय दरिन्दों के सारे, अरमान सिसकियां भरते हैं।
खूनी पंजों वाले, जीवन की भीख मांगते फिरते हैं ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जो खून शहीद बहाते, उसका पार नहीं हो सकता है।
मां बहिनों का बलिदान कभी बेकार नहीं बन सकता है।।

ऐसी कुर्बानी करने पर ही तो ये बंगला देश बना।
लाखों लोगों के बलिदानों का खून-सना परिवेश बना।।

पंद्रह करोड़ मुट्ठियां तनीं, शोषण साम्राज्य मिटा डाला।
जब पूर्व दिशा के मानचित्र से पाकिस्तान मिटा डाला।।

जब जब ऐसा भूचाल उठे, भट्ठी में भाव धधकता है।
तब जाकर दुनिया में कोई सा बंगला देश जन्मता है।।

लो नौ महिनों की रात गई नूतन प्रभात उग आया है।
ढाका का है सौभाग्य आज फिर बंगला ध्वज लहराया है।।

सपने मुजीब के सत्य हुए, वे सपने थे आजादी के।
वे सपने अब्राहम लिंकन के, वे सपने थे गांधी के।।

इतिहास बन रहा था उस दिन जब फौजी तर्पण करते थे।
वे एक लाख पाकिस्तानी जब आत्म समर्पण करते थे।।

वे एक लाख शैतान जिन्होंने भीषण नर संहार किया।
वे एक लाख हैवान जिन्होंने निर्दोषों पर वार किया।।

ललनाओं की अस्मत लूटी अपना मुंह काला जहां किया।
उन एक लाख दरिन्दों ने, छोटे बच्चों को भून दिया।।

लेकिन इतिहास साक्षी है, उन सबने घुटने टेक दिये।
सोलह तारीख दिसंबर को हथियार सामने फेंक दिये।।

जब अत्याचारी दहल जाय, शोलों का जोश दहकता है।
तब जाकर दुनिया में कोई सा बंगला देश जन्मता है।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

इसलिये नवोदित राष्ट्र तुम्हारा कोटि कोटि अभिनंदन है।
पचपन करोड़ भारत वासी मिलकर करते अभिवादन है॥

यह जीत हुई मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर औ गुरुद्वारे की।
यह जीत हुई है राम रहीम, ईसा अल्ला के नारे की॥

यह जीत पूर्ण मानवता की ही हमें दिखाई देती है।
यह जनता की आवाज विश्व में साफ सुनाई देती है॥

यह सच्चाई सच्चाई है, जनता का निर्णय पूरा है।
अब सदा सदा के लिये पाक आधा है और अधूरा है॥

जब जब जनता में ज्वाल उठे, ज्वालामुखी आग उगलता है।
तब जाकर दुनियां में कोई सा बंगला देश जन्मता है॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0 In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• *श्री दीनदयाल ओझा*

साच री जोत

कर सकै कांई अंधेरो जगत में
साच री जे जोत हिवड़ै में जळै ।

पग कूड़ रा काचा हुवै है बावळा
नाव कागद री तिरै ना नीर में
बात कैवण सूं सरै नीं कामड़ा
मीत वो जो काम आवै पीड़ में
जिण हृदय भरियो सुधारो कळस तो
गरल उण हिवड़ै बता क्यूं कर फळै ।
कर सकै कांई अंधेरो जगत में
साच री जे जोत हिवड़ै में जळै ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

चंदण भुजगां संग रैवे रात दिन
भावना खुद री कदै छोड़ै नहीं
लाख दु:ख सैवै सदा ही संत जण
पण सुपथ सूं पग कदै मोड़ै नहीं
जिण हृदय सावण बरसियो हेत रो
ठौड़ लूंवां बता क्यूं कर पळै
कर सकै कांई अंधेरो जगत में
साच री जे जोत हिवड़ै में जळै।

अज्ञान री बातां बता कद तक रैवै
जिण हृदय में भाव प्रगटै ग्यान रो
कुण करै अपमान आये मनख रो
जिण घरां है भाव सुभ सन्मान रो।
सद्भाव रा सागर जठै भरिया पड़्या
दुर्भावना उण ठौड़ जा कर क्यूं कर ढळै
कर सकै कांई अंधेरो जगत में
साच री जे जोत हिवड़ै में जळै।

क्यूं बिलखतो तूं फिरै है बावळा
हेत री नदिया बवादै भाव सूं
रेत रा धोरा न खाली देख तूं
धार सुख सरिता निरख तूं भाव सूं
जिण ठौड़ मुळकै चाव नित रितुराज रो
उण ठौड़ नै पतझड़ बता कीकर छळै
कर सकै कांई अंधेरो जगत में
साच री जे जोत हिवड़ै में जळै।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• श्री दीनदयाल ओझा

अभिनव शृंगार

पग-पग पर मुझको मत रोको ठुकराओ
वर्तमान के जीवन का तो मैं अभिनव शृंगार हूं ।

इस दुखियारी धरती को जीवन देने हित
मैंने सुख से गरल-पान स्वीकार किया
पथ-पथ पर बिखराने फूलों की कलियां
जगती के शूलों का नित शृंगार किया
जी भर अब सहने दो बाधा मत डालो
मैं उजड़े पथ का बिसराया प्यार हूं
पग-पग पर मुझको मत रोको ठुकराओ
वर्तमान के जीवन का तो मैं अभिनव शृंगार हूं ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

सभी दुःखों को बांधा आयु की रज्जु से
इसीलिए कि कोई बोल न बिखराए
छिपा लिया दुःख-सावन मैंने इन आंखों
इसीलिए कि कोई बूंद न गिर पाये
जलने दो मुझको मत रोको ज्वाला में
अंधियारी राहों का मैं आधार हूं
पग-पग पर मुझको मत रोको ठुकराओ
वर्तमान के जीवन का तो मैं अभिनव श्रृंगार हूं।

दुःख की सौगातें भीतर में ही सजा सजा
बदले में सुख की सौगात उपहारी है
प्राणों को संकट की राहों में पथरा
बदले में जीती बाजी नित हारी है।
बहने दो मुझको मत रोको इन धारों में
मैं दुखियारी गतियों का अभिसार हूं
पग-पग पर मुझको मत रोको ठुकराओ
वर्तमान के जीवन का तो मैं अभिनव श्रृंगार हूं।

खूब सुनी बातें धरती की जीवन भर
पर कोई भी आज न मेरी सुनता है
बिखरा ज्ञान बटोरा झोली में कण-कण कर
पर कोई ना आज हृदय में ही गुनता है
मुझे भटकने दो राहों में बंधन मत डालो
बिसराये सत्यों का मैं सुख सार हूं
पग-पग पर मुझको मत रोको ठुकराओ
वर्तमान के जीवन का तो मैं अभिनव श्रृंगार हूं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• श्री योगेश्वर 'मनुज'

घटनाओं के फल

अहमता के भीषण
ज्वालामुखी के मुख से
फूट पड़ी निगूढ़ परिभाषाओं
की ज्वाल
ज्ञान के कीचड़ से, दब गई
मैदान की बुलन्द आवाज
और
उठा ऐसा बवाल
जल गई
राख की ढेरी में
सत्यता की टांग
सत्य पंगु हो गया
अबाध
बहती नदिया भग गई

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

आंगन छोड़ कर
सुहागन गंगा ने किया
अग्नि स्नान
और
सिर पर मूढ हिमालय
ऐंठ गया, अकड़ से
निर्बुद्ध शान में
चटकती चिंगारियों से
पुरातन विश्वास
मृत संशयों के
इशारों से हो गये
विस्मित
समाधान का सामान ले
थके मांदे चिन्तन का
कारवां
हो कुण्ठा में भ्रमित
पहुंचा, सजाने, संवारने
बसाने
महाज्ञान की
बस्ती
अस्त व्यस्त धरती तल पर
नव कोंपल से
उग गए
पराजित खण्डहर।
शाश्वत जग के इन सूचकों
को दिया नाम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सभ्यता नश्वर
चिन्तन में शेष, थे जो
अहमृता के
रजकण
सिमटकर ले लिया
उन्होंने
थोथा निर्णय
युगदर्शन का
मगर
ये सभी सम्भावनायें हैं
घटनाओं के
फल
जो
आज भी है
और है
कल।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

• *श्री शिवराज छंगाणी*

समै भागतो जावै

निमधो-निमधो
जळै चानणो
बिजळी ग्राळै खम्भां माथै
सड़क पड़ी सरणाट
मिनख रो कोनी दोखै जायो-जाम
मिनख पणै री छूट रयी है
मोत्यां जड़ी लगाम
ग्रडोळो जीवण ग्राळो घोड़ो
भागै इगगी-बिणगी
दिशा बिसरग्यो
दशा बिगड़गी
ग्रर
बिगड़ग्यो भीड़ तंत्र रो घाण
मिनख नै मिनख खावण नै ललचावै
कीँकर ग्रावै पाण
कांपतो समै भागतो जावै
दिशावां सगळी थाम न पावै ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• श्री शिवराज छंगाणी

मायड़-भासा रै सिरजणहारां रै नांव

पळ-पळाट करता सोनलियां
आखरां मांय
मायड़-भासा रा सिरजणहारां रो नांव
इतिहास रै ऊजळै पानां माथै
मांडीजै
ईं
सिरजणहारां मांय
सोवणा सपूतां री बेलि फळै-फूलै
प्रिथ्वीराज री
'बेलि-क्रिस्न रुकमणी री'
सूर्यमल्ल मीसण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

दुरसा ग्राढ़ा ग्रर कृपाराम
'राजिया रा दूहा'
ग्रर
'हाला-झालां री कुण्डलियां'
ग्रर
'बातां-ख्यातां' सूं भरचोड़ो
भंडार ग्रखी रै'सी
आ मायड़-भासा
जयमल, दुरगा, पत्ता
परताप ग्रर पन्नाधाय
मीरां ग्रर करमां रै
सनेव सूं सींच्योड़ी
सूवटिया, मेरिया, कुरजां
ग्रर
पपइया रै लोक गीतां री
सुरली धुनां सूं संवार्‌योड़ी लागै
ग्रळगोजै री तान माथै
मांड सिरखी राग
मीठी मिसरी सी ग्रावाज
जिकी च्यानणी रात में सुवावणी लागै
मोकळा बरसां सूं
भासा री गंगा वै'वै
जिकी बैवण दो,
छीछालेदर करण वाळा
छछूंदरां नै
सरप वाळो फण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अवस दीखसी
कुरसी रै चिपक्योड़ै चींचड़ांरै–
माथै
डी. डी. टी. पोडर छिड़काइजसी
कमजोर भींत्यां, जूनै किलै री
तरियां ढहसी—
थोथी परम्परावांरा लेवड़ा
उखड़सी
लेखण री धारा
निरमळ भावां रै सागै
बैवती रैसी
इयै धारारै सामै
कद अड़ियळ रोड़ा
अटक्याअर अटकसी ?
लेखणी री स्याही
मत सूखण दो
सुतंत्तर भाव.सूं
चालै ज्यूं ई चालण दो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

• ठा० श्री जुगलसिंह खीची

है सुन्दर संसार

कानन री कुंजां में करतो कोयल कल किलकार।
कलरव सरिता रो सुण करतो मधुप मधुर गुंजार ॥१॥
नाच-नाच कर केकी करतो, मेघांरी मनवार।
पी-पी रट-रट चातक मुख में देतो जलधर धार ॥२॥
धरती वसन सुरंगा चंगा पहर पुसपरो हार।
दिग दिगन्त सूं पंछी आवै गावै मंगळाचार ॥३॥
घटा छटा छा जावै नभ में चालै सरस बयार।
कर कल्लोल लोल मन हरलै पशु-पक्षी परिवार ॥४॥
वारिधि वीचि विलास प्रभंजन भूधर भीमाकार।
रवि, शशी, अगणित तारा करता हरि महिमा साकार ॥५॥
वन उपवन रा सुमन मनोहर भव-सुषमा रा सार।
"जुगल" दरस सरस सूं शोभित है सुन्दर संसार ॥६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• श्री रामदेव आचार्य

नित राजस्थान जियो

सुख जियो हजारां बरस खुशी सूं राजस्थान जियो
सै जियो देसरा मिनख और भावी संतान जियो

आ जमीं जियो, आकास जियो, अै दरखत-रूंख जियो
मन में धोरां री धरती पर मरणै री भूख जियो
नित छाछ जियो, नित जियो बाजरी, झुक-झुक खेत जियो
ऊंठां-बैल्यां रै हेठैरी म्हारी ऊजळी रेत जियो

कूंकूं-केसर रै रंग में डूबी, भाई - बीज जियो
रूंखांरी हींडां पर बैठी सावण री तीज जियो
इण माघ-फाग रै महीणां में होळी री राग जियो
जुग जियो पोमचो मरवण रो, ढोलैरी पाग जियो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

भूरोड़ै भुरजां में मूमल री रूठी याद जियो
गळियां में गिरधर जोवै, मीरां री साध जियो
म्हारै आलीजै रो अलबेलो ऊंचो सीस जियो
ओठीड़ै सूं ठगयोड़ी पणिहारी री रीस जियो

राखी-पूनम नै नित भाई-बैना री प्रीत जियो
सासू-बहू, देवर-भावज, नणदल रा रूड़ा गोत जियो
लहंगै अर चूंदड़ पर मडयोड़ा सुरंगा मोर जियो
म्हारै बीकाणैरै मैळै री रंग रूड़ी गणगौर जियो

मारू बाजे री गूंज और कड़खै री तान जियो
हळदी घाटी में मरणो मांडयो बै इनसान जियो
मूंछयां मरोड़ती रोबीली रजपूती सान जियो
जोहर री लपटां में जळती सतियां री आन जियो

जिण पियो खून रो लाल-कसूंबो बै हथियार जियो
जिण आजादी नै कायम राखी बा तरवार जियो
चित्तौड़ जियो, मेवाड़ जियो वीरां री बड़क जियो
जुग जोधाणै रो किलो अर जैपुर री सड़क जियो

नित छैल भंवर रै ढोलक री धीमी सी धमक जियो
डफां-रम्मतां में रमती संस्कृति री रूड़ी चमक जियो
म्हारी पीढी रै लोग-लुगायां रा अरमान जियो
इण दुखी देस रै आंसू में जग री मुसकान जियो

नित फूलां सिरसा दिवस और कळियां सी रात जियो
जूनोड़ै घर में नूंवै नूंवै जीवण री बात जियो
बा याद पुराणी जियो और आगैरी आस जियो
भारत रै आभै में रवि सो म्हारो इतिहास जियो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• *धनंजय वर्मा*, राजस्थानी कवि

जागै सोयो ज्ञान जी

भारत रो सोनलियो सूरज, सिकरां चढतो जावैलो
ममता री गोदी में पळियो, समता रा गुण गावैलो

साग्गण मायड़ स्यूं भी बेसी, अिण धरती नैं मानां जी
अणहूंतो आ लाड लडावै. सगळा मन में जाणां जी

दो आंगळ भी धरती म्हारी, दुसमी छीन न पावैलो
कूड़ो हक्क जताणियो जुलमी, बिना मौत मर जावैलो

अीं धरती रो मोल आंकलै, दुसमी री औकात नहीं
रगत सींच म्है बेल बधाई, कोरी थोथी बात नहीं

न्यारै-न्यारै हाथां स्यूं जद, भिलकै बण जावै कंघी
चाथै जितनो तांण मारलै, छूट न पावै बा' कंघी

सतरंगी किरणां ज्यूं घुळकै, सूरजियै मां खो गी रे
बींया ही मोकळी जातियां, भारत भेळै होगी रे

सेळ-भेळ री डूंगी खाई, रळमिल सगळा भरदेस्यां
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, खुद नैं भारतीय कैस्यां

न्यारा-न्यारा बण्या देवरा, न्यारा ही भगवान जी
पळै भावना "लोह-एकता", जागै सोयो ज्ञान जी

◆

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

• श्री सरल

दो कवितावां

[एक]

निरभ्र आकाश
दरकती धरती
उल्टी पड़ी पेट की मटकी
कहते हैं अकाल पड़ा है
अकाल पड़ा ! अकाल पड़ा !!
अच्छा
बड़ी प्रतीक्षा बाद
स्वांग का समय मिला
आओ
तुम भी आओ
हम सभी मिलकर
अब देवताओं का अभिनय करें
इतिहास रचें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

[दो]

पहुंचना होगा
किसी एक शिखर पर
जिन्दगी या मौत
किसी एक के घर पर
निरर्थक है
प्यार या परमात्मा
याने आदमी की जात।
अनिर्णय के प्रदेश में
परिभाषायें खो जाती हैं
निर्णय की स्फटिक शिलायें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

● श्री मालचन्द खड़गावत

स्वाधीनता रजत-जयन्ती वर्ष

पच्चीस बरस पहले हमने
की विदा गुलामी को दकाल।
है बात बड़ी, हम मना रहे
यह आजादी का रजत साल॥

इस काल में हमने भारत को
मेहनत से खूब संवारा है।
उत्पादन और बढाने में
अब ऊंचा हाथ हमारा है॥

जो कुछ अब तक हम कर पाये
वे काम हैं कोई कम नहीं।
भारत से फिर टकराने का
रहा दुश्मन में भी दम नहीं॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

हम खड़े हमारे पैरों पर
यह बात गर्व से कहते हैं।
मुहताज नहीं हम औरों के
चाहे जो सुख दुख सहते हैं॥

पर अभी बहुत कुछ करना है
शोषण से मुक्ति पानी है।
समता का युग लाने खातिर
निर्धनता हमें मिटानी है॥

जो आजादी का लाभ उठा
स्वारथ में अंधे हो चूके।
दो नम्बर का धन जोड़ जोड़
फिर भी लाखों के हैं भूखे॥

उन इने गिने कुछ लोगों के
चांदी के हो गये महल खड़े।
जब कि भारत के कोटि सुत
नंगे भूखे हैं आज पड़े॥

उनके मन में कटु पीड़ा है
धुंआ भी है, चिनगारी है।
झुलसाने वाली लपटें हैं
जो नहीं किसी से हारी हैं॥

जिनका जी सकना दूभर हो
उनको मरने से क्या डर है।
बढ गया देश उनके बल पर
जिनके ना धरती पर घर हैं॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

जन साधारण तो पीड़ित हैं
महंगाई, चोर बाजारी से।
रिश्वत खोरी और पक्षपात
इस सुरसा सी बेकारी से ॥

लेकिन आशा का दीप जला
वे बैठे हैं धीरज धारे।
इक दिन तो उनका आयेगा
जो फिरते हैं मारे-मारे ॥

स्वाधीन गगन,स्वाधीन पवन
स्वाधीन हमारी धरती है।
ये बातें ही जनमानस के
सारे दर्दों को हरती हैं ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

श्री मकबूल अहमद 'अमिताभ'

रोशन माता रो नांव करो

जीणो चावो अगर जगत में तो थे पैला मरणो सीखो।
थांरै ही हाथां सूं भायां ! इतिहास इण जीवण रो लिक्खो ।।
'गांधी जी', 'जवाहर लाल', 'शास्त्री' बै भी तो इनसान हा।
पण आप-आपरै सदगुणां सूं, बै बणिया अठै महान हा ।।
उठो सभी छोटा-मोटा 'गांधी', 'जवाहर', 'लाल' बण जावां।
भारत नै खुशहाल बणावां, धरती ऊपर स्वर्ग बसावां ।।
आंपां, भारत री धरती पर, हीरा मोती निपजावां ला।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सब भ्रातृभाव पनपावां ला ।।
थे उठो, भारतियां ! कसो कमर अर खून-पसीनो एक करो।
दुनियां में जे आया हो तो रोशन माता रो नांव करो ।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

• श्रीमती कमला वर्मा

एक शब्द - चित्र

सकते में आई दुविधा
निःशब्द रही
मेरी लज्जा
पानी पानी हुई ।

वे अव्यक्त ग्लानि के
तपे हुए क्षण थे,
उन देशभक्त नेताओं के
शालीन अंदाज
सस्ते प्रसाधनों की तरह
विद्रूप होकर बहे थे
और मैंने
अत्यन्त निकट से
उनके चेहरे का
सही रंग देखा था,
उन ऊंचे और महंगे लोगों को
सस्ती सांसों के लिये
मचलते देखा था,
बहुत नीचे उतरते देखा था ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• श्री हनुमान पारीक

प्रहरी और तुम

तुम
युवा हुए
बरस पच्चीस
तुमने लिए
तुम्हारे
बचपन, यौवन के लिए
तब से आज तक
'वह' लड़ा
एक पांव
बन्दूक थामे,
उस पार नजर गड़ाए

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

हलचल आंकता
मौसम झेलता
रोटी, घर भूल कर
बारूद से, बन्दूक से
खेलता
ऑर्डर खाता
ऑर्डर पीता
रहा डटा।

एक
और तीन युद्ध
लड़ा
किसके लिए ?

एक युद्ध
बस एक युद्ध
तुम्हें लड़ना है।

नक्शे के भीतर
आदमी, आदमी को चूसे
बेईमानी, भ्रष्टाचार
डकार जाए।

अपने लिए देश को
अपनी आंख से देखे
सच और उसके साथी
दूर खड़े
रोते रहें
ऐसा कब तक ?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

फर्क भूलो
अपना-उसका, मेरा-तेरा जोड़कर
आदमी के लिए
जीयो
देश के लिए
जीयो
जीयो तो पाओ
लड़ो तो पाओ
'वह' तुम्हारे लिए
'तुम' उसके लिए !

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

• श्री भंवरलाल सुथार 'भ्रमर'

काम करो

छोड़ो
नारैबाजी
नारां सूं
पेट को भरीजै नीं
ओ तो
भरीजसी रोटी सूं
अर रोटी !
नारां सूं को मिलै नीं
ईं रै खातर तो
करणी पड़सी
मैनत जी तोड़'र
सींचणो पड़सी
पसीणो
खेतां में ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• श्री शिखरचन्द्र कोचर

तुम बढ़े चलो हे जवान

कंटक-मय मार्ग तुम्हारा है
ऊबड़ - खाबड़ पथ सारा है
पर्वत, दुर्गम जल-धारा है
एकाकी तुम, न सहारा है
जीवन में साहस-ज्योति जगा
बन दृढ़-प्रतिज्ञ कर दो प्रयाण
तुम बढ़े चलो हे नौजवान

मानव-जीवन क्षण-भंगुर है
यह विश्व चराचर नश्वर है
पर आत्मा अजर, अनश्वर है
आत्मा ही बनता ईश्वर है
जीवन का मोह त्याग करके
तुम साधन करो आत्म-कल्याण
तुम बढ़े चलो हे नौजवान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

कर्मठ का जग में आदर है
जो हटे कर्म से, कायर है
उसका ही जग में यश स्थिर है
जो सदा कर्म में तत्पर है
यह कर्म-भूमि वसुधा करती
आतुरता से तुमको आह्वान
तुम बढ़े चलो हे नौजवान

जड़ जल, स्थल, चन्द्र, सूर्य, तारे
निज कार्य-क्षेत्र में रत सारे
लेते विश्रान्ति का नाम नहीं
रुकने का क्या कुछ काम कहीं
तुम चेतन हो, क्यों रुको भला
क्योंकर आवे तुमको थकान
तुम बढ़े चलो हे नौजवान

तुम भारत के हो नौनिहाल
मां की गुदड़ी के छिपे लाल
तुम पर ही जग की आंख लगी
तुम पर ही सबकी आस टिकी
तुम पर आबाल-वृद्ध सबके
उर में हैं भरे हुए अरमान
तुम बढ़े चलो हे नौजवान

तुम अपने भाग्य-विधाता हो
नव-संस्कृति के निर्माता हो
तुम दीन-दुखी-जन-भ्राता हो
तुम आर्त-त्रस्त-जन-त्राता हो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

परहित-साधन में अपना तन
मन, धन, सब कर दो बलिदान
तुम बढ़े चलो हे नौजवान

यश-वैभव की मत चाह करो
पर-उन्नति लख मत डाह करो
सुख-दुःख की मत परवाह करो
तुम कभी न मुख से आह भरो
अपने जीवन का लक्ष्य-बिन्दु
स्थिरता से करो स्वयं सन्धान
तुम बढ़े चलो हे नौजवान

सब सुप्त जनों को जागृत कर
सबसे तुम मेल करो सत्वर
अघ, कलह, अविद्या-नाश करो
जग में सुख,शान्ति,समृद्धि भरो
भारत का कर दो अभ्युत्थान
तुम बढ़े चलो हे नौजवान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

• *श्री वल्लभेश दिवाकर*

बोलो जय-जय भारती

एक हाथ में दीपक लेकर एक हाथ में आरती
अंतर में प्यार विश्व का बोलो जय-जय भारती
कण-कण से आवाज आ रही हमें चाहिए एकता
नहीं चाहिए मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर के देवता
धिक्कारो उस ताकत को जो नहीं किसीको तारती
बोलो जय-जय भारती
कह दो हम गंगा के बेटे औ यमुना के प्रान हैं
रक्षा का हथियार हमारा बांसुरिया की तान है
हम उस मां के लाल जो जग पर तन-मन वारती
बोलो जय-जय भारती
हमने तो सिंगार किया है अपना हित बलिदानों से
गौरव पनपा नहीं हमारा महलों से मयखानों से
हम उस मिट्टी के बन्दे जो गिरते प्रान उबारती
बोलो जय-जय भारती
हमने मानव की सांसों को बख्शा शाश्वत प्यार है
हमें विश्व को कुछ कहने का इसीलिए अधिकार है
हम उस वाणी के स्वर हैं जो पावन मंत्र उचारती
बोलो जय-जय भारती।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

• श्री भंवरलाल छजलानी

अब जनतंत्र की बारी है

देख दिवस मानस चमका
इस युग में भी मन-मानी है
प्रकृति नटी ने भी क्या
सैनिक शासन की ठानी है
ऋतु वसंत के नव पल्लव को
सूर्य किरण की बहुत चाह
नव-जात राष्ट्र की जनता को
सीखनी कर्णधारों से राह
सूर्य किरण बिना नव पल्लव
इत उत होते जाते हैं
गुमराही नेताओं के पीछे
ज्यूं राष्ट्र भी गोते खाते हैं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

अस्थिरता पल्लव की देख
प्रकृति नटी ने स्वांग बनाया
मानो इस युग में भी
भीषण सैनिक शासन आया
तूफान चला बिजली चमकी
वसंत की वाड़ उड़ाने को
सैनिक शासन ज्यूं आता
जनतंत्र का नाम मिटाने को
किन्तु सुन री ए प्रकृति नटी
अब न डरेगा यह पल्लव
वृक्ष उसी पर खड़े अनेक
साथी करते रहते कलरव
जो जितना ऊपर उठा हुआ
मूल भी उतना ही गहरा है
खींच-खींच धरती का रस
आज तक वृंत पर ठहरा है
जो कभी न हिलेगा, सदा खिलेगा
परोपकार आधारी है
सुन ले कुटिल हृदयान नटी
अब जनतंत्र की बारी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

श्री मूलचन्द 'प्राणेश'

आवो आंपां आदमियत ऊगावां

आदमी, आदमी है
बैमाता री सजोर सर्जना
इणरी अकलरैं आगै
अकल री देवी सरस्वती शस्त्र न्हांख दिया
इण रै हाथां रो चिमटकार देख
परमाणुवां रा पींडा थरथरावे
इण रैं बधतै प्रभाव
कोश में छपियै असंभव शब्द रैं
शब्दार्थ नै संदेहास्पद बणाय दियो
पण
आदमी अकल कानी जितरो बधियो
हिड़दै कानी सूं उतरो ही पाछो हटग्यो
आज इण नै
आपरा ही भाई-बंधु ओपरा लागै
खुद रै स्वारथ नै साजण वगा
इणां रै लारै लाठी, कुतको ही नहीं,
परमाणुवां रा हथियार लेय-लेय भागै
औ किसो समझै कोनी
कै, बंदूक री गोळी सूं मरणिया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

जिकां नै केई बार दुसमण कैयर भी बतळावै
घास-फूस अर भाठा-दगड़ है !
नहीं, उवै उण ही बाप री औळाद है
जिकै इण चराचरी री रचना रचाई
सागी भाई !
काल री ही बात है,
बेहया याह्यै, बंगला देश में
आपरै भायां रो कत्ले-आम करवायो
अर आज वियतनाम में
अमरीका रा हवाबाज !
बंबां री विरखा करै
इण सूं किसी धरती री उर्वरा शक्ति वधसी
अथवा साख दुगुणी नीपज सी
आखर तो इण रै प्रभाव सूं आदमी मरसी
आदमी री लड़ाई आदमी सूं नहीं
आदमियत नै डुबोवणियै लखणां सूं है
चोरी, जोरी, जुल्म, जमाखोरी
जिण रो परिणाम भुखमरी, बेकारी हुवै
उणां शत्रुवां नें मारणो
आदमी रो पैलो धर्म है
अर आदमी नै आदमी समझणो
आदमियत रो खास मर्म है
डाकण भी आपरै घर री तो शर्म राखै
तो पछै आंपां आदमी हुयर
आदमी पणै नै क्यूं लजावां
आवो आंपां आदमियत ऊगावां ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रस्तुत संकलन के कवि

श्री ओम केवलिया : अनुदेशक, शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय
पूगल रोड, बीकानेर (राज०)

श्रीमती कमला वर्मा : दरजी गली, कोट गेट के अन्दर,
बीकानेर (राज०)

श्री कान्ह महर्षि : महर्षि साहित्य सदन
नोखा मंडी (बीकानेर—राज०)

श्री चंचल हर्ष : हर्षों का चौक, बीकानेर (राज०)

ठा० श्री जुगलसिंह खीची : खीची निवास,
गजनेर रोड, बीकानेर (राज०)

श्री दीनदयाल ओझा : बिन्नाणियों का चौक, बीकानेर (राज०)

श्री धनंजय वर्मा : (राजस्थानी कवि)
गांधी म्युनिसिपल हॉल के सामने, बीकानेर (राज०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

श्री बुलाकीदास बावरा : द्वारा श्री धनसुखदास पुरोहित
सूरसागर के पास, बीकानेर (राज०)

श्री भंवरलाल छजलानी : मु० पो० दियातरा (बीकानेर)

श्री भंवरलाल सुथार 'भ्रमर' :
ईदगाह बारी के अन्दर, बीकानेर (राज०)

श्री भरत व्यास : भरत भवन
न्यू जूहू रोड, विले पार्ले, बम्बई-५५

श्री भवानी शंकर व्यास 'विनोद' : व० अ०, फोर्ट उ० मा० विद्यालय
बीकानेर (राज०)

श्री मकबूल अहमद 'अमिताभ' : लुहारों का मोहल्ला, फड़ बाजार,
बीकानेर (राज०)

डा० श्री मनोहर शर्मा : शार्दूल संस्कृत विद्यापीठ क्वार्टर,
रानी बाजार, बीकानेर (राज०)

श्री मालचन्द खड़गावत : बीकानेर (राज०)

श्री मूलचन्द 'प्राणेश' : चोखूंटी, गजनेर रोड, बीकानेर (राज०)

श्री मोहन आलोक : १४१, एच० ब्लाक, श्रीगंगानगर (राज०)

श्री मोहम्मद सदीक : राज० सिटी उच्च माध्यमिक विद्यालय
बीकानेर (राज०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

श्री योगेश्वर 'मनुज' राजस्थानी :

द्वारा श्री अटल दीपक, मूंधड़ा क्वार्टर्स
गंगाशहर रोड, बीकानेर (राज०)

श्री रामदेव आचार्य : अंग्रेजी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, करोली (राज०)

श्री रामनाथ व्यास 'परिकर' : सहकारी प्रशिक्षण महाविद्यालय,
बृज विलास महल, कोटा-१ (राज०)

श्री वल्लभेश दिवाकर : रतनबिहारी जी पार्क के सामने,
बीकानेर (राज०)

श्री पं० विद्याधर शास्त्री : संपादक : विश्वंभरा, नागरी भंडार,
स्टेशन रोड, बीकानेर (राज०)

श्री विशनलाल 'मतवाला' : सुथारों की बड़ी गुवाड़, बीकानेर (राज०)

श्री शंभूदयाल सकसेना : एजूकेशनल प्रेस, फड़ बाजार,
बीकानेर (राज०)

श्री शिखरचन्द्र कोचर : अवकाशप्राप्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश,
कोचरों की गुवाड़, बीकानेर (राज०)

श्री शिव पांडे बीकानेरी : हनुमान हत्था, बीकानेर (राज०)

श्री शिवराज छंगाणी : नत्थूसर गेट के अन्दर, बीकानेर (राज०)

श्री श्रीकृष्ण विश्नोई : व० अ०, जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय,
बीकानेर (राज०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

श्री सरल विशारद : राज्यश्री प्रिंटिंग प्रेस,
बी० सेठिया गली, बीकानेर (राज०)

श्री सांवर दईया : द्वारा कानीराम सागरमल,
महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर (राज०)

श्री सूर्यशंकर पारीक : भा० वि० मं० शोध प्रतिष्ठान,
(रतनबिहारी जी का मंदिर), बीकानेर (राज०)

श्री हनुमान पारीक : सोनगिरी कुआ, बीकानेर (राज०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

10/-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh